समकालीन साहित्य

विकास, विस्थापन और समाज

सम्पादक

डॉ. पी. रवि | डॉ. मूसा एम.

Scanned with CamScanner

विकास, विस्थापन और साहित्य, साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र में एकदम नया विषय है। अभी तक आलोचना के क्षेत्र में इस विषय को लेकर कोई पुस्तक नहीं प्रकाशित हुई है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में विकास को लेकर एक–दो पुस्तकें आ गयी हैं। भारत विभाजन सम्बन्धी विस्थापन एवं शरणार्थी समस्याओं को लेकर पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन विकास, विस्थापन तथा उसके हेतु जो मानवीय एवं पर्यावरण–पारिस्थितिक संकट पैदा हुआ है, वह विभाजन सम्बन्धी विस्थापन से बिल्कुल अलग है। समकाल में इसी मुद्दे को लेकर साहित्य रचा जाता है, किन्तु उसके समग्र अध्ययन का कार्य नहीं हुआ है, जिसकी सख़्त ज़रूरत है। इसे मद्देनज़र रखते हुए कालटी श्रीशंकराचार्य विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में जो संगोष्ठी हुई, उसमें प्रस्तुत प्रपत्रों के साथ कुछ और आलेख जोड़कर पुस्तक बनाने का प्रयास हुआ, जिसका यह सुखद परिणाम है।

आलोचना / Criticism

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से
Vani Prakashan's signature motif is created by
Artist Maqbool Fida Husain

www.vaniprakashan.com

ISBN : 978 93 89012 24 8

e E-book Available

9 789389 012248

आवरण : वाणी स्टूडियो

Scanned with CamScanner

वाणी प्रकाशन

4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

फ़ोन : +911123273167 फ़ैक्स : +911123275710

शाखाएँ

अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार

कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र

सुल्तानिया रोड, मोतिया पार्क, भोपाल 462 001, मध्य प्रदेश

www.vaniprakashan.com

marketing@vaniprakashan.in

sales@vaniprakashan.in

SAMKALEEN SAHITYA : VIKAS, VISTHAPAN AUR SAMAJ
Edited by Dr. P. Ravi & Dr. Moosa M.

ISBN : 978-93-89012-24-8
Criticism

© सम्पादक एवं लेखकगण

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : ₹ 595

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

अनुक्रम

विकास का मतलब 7
पंकज बिष्ट

विकास की अवधारणा पर पुनर्विचार की आवश्यकता 20
रघुवंश मणि

विकास का आतंकवाद, मुख्यधारा का भोगवाद और आदिवासी प्रति–संस्कृति 27
रणेन्द्र

विकास, विस्थापन और साहित्य 48
रामजी राय

विस्थापन : विडम्बना और त्रासदी 63
वीरेन्द्र मोहन

विकास की भूमण्डलीय नीति और आदिवासी समाज का यथार्थ 73
विनोद तिवारी

भारतीय साहित्य में विकास और विस्थापन की त्रासदी 96
विश्वासी एक्का

विस्थापन और हिन्दी उपन्यास 104
बीरपाल सिंह यादव

विकास, विस्थापन और समकालीन उपन्यास 116
शिगेश जी.एस.

आदिग्राम का वह तीसरा आदमी कौन है? 128
मूसा एम.

Scanned with CamScanner

कहानियों में विकास की विडम्बना 138
भँवरलाल मीणा

मनुष्यता और सत्ता के उन्माद की लड़ाई 146
पी. रवि

विकास, विस्थापन और हिन्दी कविता 160
पंकज पराशर

विकास, विस्थापन और स्त्री–सम्बन्धों की अभिव्यंजनाएँ 169
प्रोमिला

विकास, विस्थापन और रामपुर बाग़ की प्रेम कहानी 181
आशुतोष कुमार

विकास, विस्थापन और झारखण्ड की आदिवासी महिलाएँ 192
रवि रंजन

बोल व्यापारी तब क्या होगा...विकास, विस्थापन और कथेतर लेखन 205
गणपत तेली

मानगढ़ आन्दोलन केन्द्रित साहित्य : पाठकीय नज़रिया 217
प्रणव कुमार ठाकुर

Scanned with CamScanner

आदिग्राम का वह तीसरा आदमी कौन है?

मूसा एम.

'आदिग्राम उपाख्यान' नंदीग्राम–घटना पर आधारित एक उपाख्यान है। नंदीग्राम भारत के पश्चिमी बंगाल राज्य के प्रशासकीय ज़िला पूर्वी मेदिनीपुर का एक ग्रामीण क्षेत्र है। कलकत्ता के सैटेलाइट शहर हल्दिया के विकास में इसकी प्रमुख भूमिका रही है। हल्दिया के लिए ताज़ी सब्ज़ियाँ, चावल और मछली आदि की आपूर्ति नंदीग्राम से की जाती है। हल्दिया की ही तरह, नंदीग्राम भी, व्यापार और कृषि के लिए अनुकूल भूमि है। इसके किनारों पर, गंगा और हल्दी नदियाँ फैली हुई हैं। ये दोनों नदियाँ यहाँ की भूमि को उपजाऊ बनाती हैं। यह हल्दिया डेवलपमेंट अथॉरिटी के तहत आनेवाला एक क्षेत्र है। कई सालों से नंदीग्राम भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के लाल किले की तरह था।

2007 में, पश्चिम बंगाल की वाम सरकार ने सलीम ग्रुप को 'स्पेशल इकनॉमिक ज़ोन' नीति के तहत, नंदीग्राम में एक 'रसायन केन्द्र' (केमिकल हब) की स्थापना करने की अनुमति प्रदान करने का फ़ैसला किया। पार्टी के प्रचारण के अनुसार यह क्षेत्र एक औद्योगिक क्षेत्र बन जाता और राज्य में अधिक निवेश तथा नौकरियों के द्वार खुल जाते। लेकिन नंदीग्राम में रसायन केन्द्र (केमिकल हब) बनाने की राज्य सरकार की योजना को लेकर उठे विवाद के कारण विपक्ष की पार्टियों ने भूमि अधिग्रहण के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। तृणमूल कांग्रेस, सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ़ इंडिया (एसयूसीआई), जमात उलेमा–ए–हिंद और इंडियन नेशनल कांग्रेस के सहयोग से 'भूमि उच्छेद प्रतिरोध कमिटी' (बीयूपीसी) नाम से अधिग्रहण के ख़िलाफ़ लड़ने वाली एक समिति की स्थापना की गयी। सत्तारूढ़ सीपीआई (एम) पार्टी के अनेक समर्थक भी इसमें जुड़ गये।

Scanned with CamScanner

मनुष्यता और सत्ता के उन्माद की लड़ाई*

पी. रवि

जो प्रकृति के सबसे निकट है, जंगल उनका है
आदिवासी जंगल में सबसे निकट है, इसलिए जंगल उन्हीं का है
अब उनके बेदखल होने का समय है,
यह वही समय है, जब आकाश से
एक तारा बेदखल होगा, एक पेड़ से पक्षी बेदखल होगा
आकाश से चाँदनी बेदखल होगी
जब जंगल से आदिवासी बेदखल होंगे
जब कविता से एक एक शब्द
बेदखल होंगे। (विनोद कुमार शुक्ल)

विकास आज सबसे गुंजायमान शब्द है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण–पारिस्थितिक क्षेत्र में इसके समान और कोई शब्द मुखरित नहीं है। इसके मुखर होने से कुछ आनन्द से उन्मादित होते हैं, कुछ आतंकित होते हैं और कुछ इससे अनभिज्ञ रहते हैं। लगभग तीस–चालीस साल के पूर्व हम देश व समाज की उन्नति एवं प्रगति की बातें करते थे और 1990 के बाद इन शब्दों की जगह विकास शब्द केन्द्र में आ गया है। वैश्वीकरण के इस दौर में खुद मानव भी संसाधन में बदल गया है। आज मानव संसाधन आयात–निर्यात तथा वितरण सम्बन्धी संस्थाएँ कार्यरत हैं। मनुष्य को, पानी को, वायु को, सम्पूर्ण प्रकृति को संसाधन के अन्तर्गत लाने वाले विकास का मार्ग एवं मकसद क्या नेक है? क्या ये सब जनहित के लिए हैं? विकास पर बहस

* एकान्त श्रीवास्तव की 'डूब' कविता की पंक्ति है।

Scanned with CamScanner